मंगला गौरी स्तुति

जय जय जय गिरिराज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी॥

जय गजबदन हरानन माता।
जगत जननि दामिनी दुति गाता॥

देवी पूजि पद कमल तुम्हारे।
सुर नर मुनि जन होहिं सुखारे॥

मोर मनोरथ जानहु नीकें।
बसहु सदा उर पुर सबहीं के॥

कीन्हेऊं प्रगट न कारन तेहिं।
कीन्हेऊं प्रगट न कारन तेहिं॥

बिनय प्रेम बस भई भवानी।
खसी माल मुरति मुसकानि॥

सादर सियं प्रसाद सिर धरेऊ।
बोली गौरी हरषु हियं भरऊ॥

सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहिं मनुकामना तुम्हारी॥

नारद बचन सदा सूचि साचा।
सो बर मिलहि जाहिं मन राचा॥

मनु जाहिं राचेउ मिलहिं सो बरु सहज सुंदर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥

एही भांती गौरी असीस सुनी सिय सहित हियं हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल